डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–30 अप्रैल, 2020)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में दिनकर का स्थान

छायावाद के बाद और प्रगतिवाद से पहले काव्य की एक धारा प्रेम और मस्ती या हालावाद की थी और दूसरी धारा राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता की थी। इस धारा के कवियों ने प्रेम और मस्ती या मयखाने की गलियों को छोड़कर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चिन्ता–चेतना के राजपथ से जुड़े। इस काव्यधारा के प्रमुख कवियों में **बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'** (1897–1960 ई0), **उदयशंकर भट्ट** (1898–1966 ई0), और **रामधारी सिंह दिनकर** (1908–1974 ई0), हैं। दिनकर का जन्म 23 सितम्बर, 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में हुआ था और उनकी मृत्यु 24 अप्रैल, 1974 को सिमरिया में हुई। बालकृष्ण षर्मा 'नवीन' परंपरा और समकालीनता के कवि हैं। उनकी कविता में स्वच्छंदतावादी धारा के प्रतिनिधि स्वर के साथ–साथ समकालीन राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना, गाँधी दर्षन और संवेदनाओं की ओजपूर्ण झलक मिलती है। इनकी अबतक की प्रकाषित रचनाएं कुंकुम, अपलक, रष्मि–रेखा, क्वासि, विनोवा–स्तवन। 'कुकुम' के गीतों में राष्ट्रीयता और 'उर्मिला' प्रबंध काव्य में भारतीय सांस्कृतिक काव्यधारा का प्रवाह मिलता है। 'अपलक', 'रष्मि–रेखा' और 'क्वासि' के गीतों में क्रांति एवं विप्लव का स्वर तीव्रता के साथ मुखरित हुआ है। समाज के षोषितों–वंचितों की दयनीय दषा देखकर कवि की वाणी में क्रांति एवं जागरण का विस्फोट हो उठता है। 'विप्लव' का एक प्रसिद्ध गीत है–

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाये।
नियम और उपनियमों के ये, बन्धन टूट छिन्न–भिन्न हो जायें।
विष्वम्भर की पोषक वीणा, के सब तार मूक हो जायें।

इस तरह आधुनिक हिन्दी कविता के राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के विकास में बालकृष्ण षर्मा 'नवीन' का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उदयषंकर भट्ट हिन्दी के विद्वान प्रसिद्ध लेखक और कवि थे। उनकी मुख्य काव्य कृतियां हैं– तक्षषीला, राका, मानसी, विसर्जन, अमृत और विष, इत्यादि, युगदीप, यथार्थ और कल्पना, विजयपथ, अन्तर्दर्षन : तीन चित्र और 'मुझमें जो षेष है' आदि। उन्होंने जीवन में 'श्रम' के महत्त्व और 'श्रमिकों के मूल्य' को मिथ्या परंपराओं और भाग्यवाद से परे प्रतिपादित किया। उन्होंने लिखा है–

'जीवन ष्वेत धार है जन की, जिसमें कोई रंग नहीं है।'

और बालकृष्ण षर्मा 'नवीन' की तरह वे परिवर्तन की आकांक्षा के प्रबल आग्रही रहे हैं। एक चित्र है –

'ओ प्रिय ! अब मत करो भूलकर अपना यह श्रृंगार पुराना।'

इस प्रकार छायावाद के तुरंत बाद राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा का व्यापक विकास हुआ, जिसमें छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के गीतों के लय के साथ प्रसाद और निराला की राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का व्यापक विकास हुआ। इस परंपरा की अगली कड़ी के रूप

में छायावादी कुहासे को छांटने वाली षक्तियों में दिनकर की प्रवाहमयी ओजस्विनी कविता का ऐतिहासिक महत्त्व है।

रामधारीसिंह दिनकर के षब्दों का प्रयोग करें तो वे 'छायावाद की ठीक पीठ पर आए'। दिनकर की कविता पर राष्ट्रीयता की छाप सर्वाधिक है। वहीं उनमें भारतीय संस्कृति की चिन्ता के साथ–साथ सामंती षोषण की पक्षधरता भी दिखलायी पड़ती है। वे हरिवंष राय बच्चन की तरह एकांत व्यक्तिवादी नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के प्रखर प्रवक्ता थे। उनके प्रथम तीन काव्य संग्रह 'रेणुका' (1935), 'हुंकार'(1938) और 'रसवंती'(1939) उनके आरंभिक आत्ममंथन और हुंकार युग की काव्य रचनाएं हैं। 'रेणुका' में अतीत के गौरव के प्रति सहज आग्रह के साथ देष के वर्तमान परिदृष्य से व्यथित मन की वेदना अभिव्यक्त है। 'हुंकार' में अतीत के गौरवगान की अपेक्षा वर्तमान दीनता के प्रति व्यापक आक्रोष का विस्फोट मिलता है। एक चित्र है–

'सुनूँ क्या सिन्धु मैं गर्जन तुम्हारा,
स्वयं युगधर्म का हुंकार हूँ मैं।'

'सामधेनी'(1947) में दिनकर की सामजिक चेतना स्वदेष और परिवेष से आगे बढ़कर विष्व वेदना का अनुभव कराती है। यहां कवि के स्वर का 'वेग' और 'ओज' एक नये वैष्विक षिखर को छूता हुआ जान पड़ता है। 'नीलकुसुम' (1953) में दिनकर के एक नये रूप का दर्षन होता है। इस संग्रह की कविताएं नयी कविता की तर्ज पर प्रयोगषीलता के आग्रह से परिचालित है। उन्हें अपनी कमियों का अंदाजा था बावजूद इसके उनके नयेपन का बोध, प्रयोगषीलता की ललक अद्‌भुत ढ़ंग से उपस्थित है।

उक्त मुक्तक काव्य के अलावे दिनकर ने अनेक प्रबंध काव्यों की रचना की। इनमें 'कुरुक्षेत्र'(1946), 'रष्मिरथी' (1952) और 'उर्वषी' (1961) आदि मुख्य हैं। 'कुरुक्षेत्र' में महाभारत के षांतिपर्व के मूल कथानक का प्रतिमान लेकर दिनकर ने ''युद्ध और षांति'' के विराट् प्रष्न और उसके द्वन्द्व का गंभीरतापूर्वक विवेचन किया है। भीष्म और युधिष्ठिर के संलाप के माध्यम से उन्होंने अपनी विचारधारा को प्रस्तुत किया। 'रष्मिरथी' में भी उन्होंने महाभारत की कर्ण–कुन्ती की कथा को प्रभावकारी ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। 'कुरुक्षेत्र' के बाद उनके नवीनतम काव्य–रूपक 'उर्वषी' में एक नये विचार तत्व की प्रधानता मिलती है। 'उर्वषी' को उन्होंने स्वयं ''कामाध्यात्म'' की रचना कहा। इस काव्य में दिनकर ने उर्वषी और पुरुरवा के प्राचीन आख्यान को एक नये अर्थ से जोड़कर कामानुभव की व्याख्या की है। 'उर्वषी' मूलतः प्रेम और सौंदर्य का काव्य है। प्रेम और सौंदर्य की मूल धारा में राष्ट्रवाद और वीर रस की प्रधानता भी मिलती है। प्रेम और सौंदर्य को प्रत्यक्ष रूप में परिभाषित करना इस काव्य की बड़ी विषेषता है। इस रचना के लिए 1972 में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

इस प्रकार उपयुक्त तथ्यों के आलोक में हम सकते हैं कि दिनकर एक विलक्षण प्रतिभा के कवि हैं और उनमें युगधर्म गतिषील रूप में जीवंत है। छायावाद के बाद राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के विकास में दिनकर का अमूल्य योगदान रहा है। उनकी गद्य कृतियों में भी उनकी विलक्षणता देखी जा सकती है। 1956 ई0 में प्रकाषित 'संस्कृति के चार अध्याय' मानव सभ्यता के चार पड़ावों के विकास का इतिहास है। 'कस्मैदेवाय' नामक कविता वर्तमान आधुनिक सभ्यता और भूख का भीषण चित्र देखने के साथ सोचने योग्य है–

'हटो मेघ के व्योम पन्थ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं।
दूध–दूध ओ वत्स तुम्हारा दूख खोजने हम आते हैं।'

दिनांक : 30 / 04 / 2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**